<u>Media coverage of Khijuria Jamtara workshop of Prof Rashmi Singh (March 27)</u>

1. Ranchi Express

आईआईटी (आईएसएम) संकाय सदस्यों ने जामताड़ा के सुदूरवर्ती खिजुरिया गांव में वैज्ञानिक जागरूकता अभियान चलाया

धनबाद / जामताड़ा जिले के दूरदराज के गांवों के किसानों को कृषि आधारित स्व-उद्यमी बनने की सुविधा प्रदान करने के लिए चल रहे अभियान को जारी रखते हुए, आईआईटी (आईएसएम) के प्रबंधन अध्ययन विभाग के संकाय सदस्यों के एक समूह ने आज जामताड़ा के फतेहपुर ब्लॉक के खिजुरिया गांव का दौरा किया और चयनित किसानों के समूह को उनकी आर्थिक खुशहाली में सुधार के लिए उनके गाँव में आवश्यक कृषि हस्तक्षेपों के बारे में अवगत कराया।

मौका था खिजुरिया के पंचायत भवन में विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग प्रायोजित परियोजना के हिस्से के रूप में आयोजित एक कार्यशाला का, जिसका शीर्षक था, ÷झारखंड राज्य के जामताड़ा जिले में गेम थ्योरेटिक और संचालन अनुसंधान तकनीकों का उपयोग करके अनुसूचित जनजाति समुदायों के आर्थिक कल्याण में सुधार÷ ÷कार्यशाला में खिजुरिया और आस-पास के गांवों के कुल 35 किसानों और कृषि मित्रों ने, जमुनी हेम्ब्रम, गांव मुखिया के नेतृत्व में भाग लिया, जिसमें सिंचाई के मौजूदा पैटर्न, मिट्टी के प्रकार, उन्नत कृषि तकनीक और आय के स्रोत पर विस्तृत चर्चा हुई। किसान आदि÷ प्रबंधन अध्ययन विभाग की सहायक प्रोफेसर, जो परियोजना की प्रमुख अन्वेषक भी हैं, रश्मी सिंह ने कहा कि गांव की मिट्टी की उर्वरता कमोबेश अच्छी है, लेकिन गांव में उचित सिंचाई सुविधाओं का अभाव है। प्रोफेसर सिंह ने कहा, ÷हमने किसानों को बाजरा और रागी जैसे बाजरा की खेती करने का सुझाव दिया है, जिन्हें कम पानी की उपलब्धता के साथ उगाया जा सकता है।÷ और विकास (स्श्रश्च्ष्ठ) परियोजना।

प्रोफेसर नीलाद्रि दास ने कहा, ÷हमने देखा कि पानी की पर्याप्त आपूर्ति, अच्छी गुणवत्ता वाले बीज और वैज्ञानिक खेती की सुविधा के साथ गांव में दोहरी फसल भी संभव है÷ और कहा कि कार्यशाला का उद्देश्य फतेहपुर के खिजुरिया गांव की विशिष्ट समस्याओं को समझना था। उनके लिए विशिष्ट हस्तक्षेप डिज़ाइन करने और प्रश्नावली के माध्यम से प्रोजेक्ट टीम द्वारा प्राप्त डेटा को मान्य करने के लिए ब्लॉक करें। दास ने आगे कहा, ÷हालांकि किसानों को आम तौर पर आवश्यक वस्तुओं के उत्पादक के रूप में देखा जाता है, न कि जानकार कृषि आधारित उद्यमियों/निवेशकों के रूप में, लेकिन हमारी परियोजना में मूल रूप से प्रस्ताव दिया गया है कि किसानों को आवश्यक वस्तुओं के उत्पादक के रूप में देखा जाए÷ और कहा कि कार्यशालाएं पहले भी आयोजित की जा चुकी हैं। परियोजना के हिस्से के रूप में जामताड़ा के 16 से अधिक गांवों में।

2. **Dainik Bhaskar**

आईआईटी (आईएसएम) संकाय सदस्यों ने जामताड़ा के सुदूरवर्ती खिजुरिया गांव में वैज्ञानिक जागरूकता अभियान चलाया

धनबाद

जामताड़ा जिले के दूरदराज के गांवों के किसानों को कृषि आधारित स्व-उद्यमी बनने की सुविधा प्रदान करने के लिए चल रहे अभियान को जारी रखते हुए, आईआईटी (आईएसएम) के प्रबंधन अध्ययन विभाग के संकाय सदस्यों के एक समूह ने आज जामताड़ा के फतेहपुर ब्लॉक के खिजुरिया गांव का दौरा किया और चयनित किसानों के समूह को उनकी आर्थिक खुशहाली में सुधार के लिए उनके गाँव में आवश्यक कृषि हस्तक्षेपों के बारे में अवगत कराया। मौका था खिजुरिया के पंचायत भवन में विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग प्रायोजित परियोजना के हिस्से के रूप में आयोजित एक कार्यशाला का, जिसका शीर्षक था, ‡झारखंड राज्य के जामताड़ा जिले में गेम थ्योरेटिक और संचालन अनुसंधान तकनीकों का उपयोग करके अनुसूचित जनजाति समुदायों के आर्थिक कल्याण में सुधार‡

‡कार्यशाला में खिजुरिया और आस-पास के गांवों के कुल 35 किसानों और कृषि मित्रों ने, जमुनी हेम्ब्रम, गांव मुखिया के नेतृत्व में भाग लिया, जिसमें सिंचाई के मौजूदा पैटर्न, मिट्टी के प्रकार, उन्नत कृषि तकनीक और आय के स्रोत पर विस्तृत चर्चा हुई। किसान आदि‡ प्रबंधन अध्ययन विभाग की सहायक प्रोफेसर, जो परियोजना की प्रमुख अन्वेषक भी हैं, रश्मी सिंह ने कहा कि गांव की मिट्टी की उर्वरता कमोबेश अच्छी है, लेकिन गांव में उचित सिंचाई सुविधाओं का अभाव है। प्रोफेसर सिंह ने कहा, ‡हमने किसानों को बाजरा और रागी जैसे बाजरा की खेती करने का सुझाव दिया है, जिन्हें कम पानी की उपलब्धता के साथ उगाया जा सकता है।‡ और विकास (एसएंडटी) परियोजना। प्रोफेसर नीलाद्रि दास ने कहा, ‡हमने देखा कि पानी की पर्याप्त आपूर्ति, अच्छी गुणवत्ता वाले बीज और वैज्ञानिक खेती की सुविधा के साथ गांव में दोहरी फसल भी संभव है‡ और कहा कि कार्यशाला का उद्देश्य फतेहपुर के खिजुरिया गांव की विशिष्ट समस्याओं को समझना था। उनके लिए विशिष्ट हस्तक्षेप डिजाइन करने और प्रश्नावली के माध्यम से प्रोजेक्ट टीम द्वारा प्राप्त डेटा को मान्य करने के लिए ब्लॉक करें। दास ने आगे कहा, ‡हालांकि किसानों को आम तौर पर आवश्यक वस्तुओं के उत्पादक के रूप में देखा जाता है, न कि जानकार कृषि आधारित उद्यमियों/निवेशकों के रूप में, लेकिन हमारी परियोजना में मूल रूप से प्रस्ताव दिया गया है कि किसानों को आवश्यक वस्तुओं के उत्पादक के रूप में देखा जाए‡ और कहा कि कार्यशालाएं पहले भी आयोजित की जा चुकी हैं। परियोजना के हिस्से के रूप में जामताड़ा के 16 से अधिक गांवों में। दास ने आगे कहा, ‡निवेशक के रूप में किसान ऐसी रणनीति अपनाकर लाभान्वित हो सकते हैं जो लंबी अवधि में उनकी कमाई को अधिकतम और स्थिर बनाए रखेगी।

3. https://thejharkhandstory.co.in/jharkhand-news-iit-ism-faculty-members-teach-tribal-farmers-scientific-farming/
4. https://www.facebook.com/share/kaSD5EtmnW3B5Sut/?mibextid=oFDknk
5. https://www.khabar24bharat.com/?p=1592